संन्यास:
ध्यान-मस्ती का कारवां

संन्यास स्वतंत्रता है। संन्यास में दीक्षा कोई बंधन नहीं है, बल्कि अपनी स्वतंत्रता की घोषणा है।

एक मित्र ने पूछा है—अक्सर और भी मित्र यह प्रश्न पूछते हैं—कि ध्यान-शिविरों में किसी शिविर संचालक से जब उन्हें संन्यास-दीक्षा मिलती है तो क्या वह संचालक उनका गुरु हो जाता है?

नहीं, यह दीक्षा ओशो की ओर से घटित होती है, संचालक की भूमिका मात्र निमित्त की है, गुरु की नहीं। स्वयं ओशो ने भी अपने को साक्षी कहा है कि मैं तुम्हारे संन्यास का साक्षी हूं। संचालक मात्र निमित्त हैं। दीक्षा के द्वारा आप उनसे नहीं जुड़ते बल्कि आप एक नई यात्रा पर निकलते हैं जो परम स्वतंत्रता की है; आप उनके किसी दल अथवा संगठन में शामिल नहीं हो जाते, क्योंकि संन्यास कोई दल अथवा संगठन नहीं है — और ओशो का नव-संन्यास तो ऐसी किसी संकीर्णता को महत्व नहीं देता। दीक्षा देने वाला आपका गुरु नहीं है और अगर उसे यह ख्याल पकड़ जाए कि वह है और आपको अपने से बांधने लगे तो सावधानी की जरूरत है। संन्यास कोई बंधन स्वीकार नहीं करता।

ओशो के नव-संन्यास में दीक्षित होकर नए मित्र एक प्रकार से ध्यान के सह-यात्री बनते हैं। यह जो संन्यासियों का आनंद-उत्सव का विशाल कारवां है, इसके नृत्य के भागीदार बनते हैं; यहां कुछ बड़े-छोटे की बात नहीं, कोई गुरुता नहीं, कोई गंभीरता नहीं। कोई नेता नहीं, कोई अनुयायी नहीं। यह मित्रों का मस्ती का कारवां है। इसमें सभी का स्वागत है।

(इस स्तंभ में समय-समय पर ऐसे प्रश्नोत्तरों को प्रकाशित किया जाएगा)

ओशो नो-माइंड ग्रुप

अ-मन का अर्थ है—निर्विचार चैतन्य। और मन का अर्थ है—निर्विचार चैतन्य नहीं, वरन जिबरिश (अनर्गल प्रलाप)। और जब मैं तुमसे जिबरिश करने को कहता हूं, तो मैं इतना ही कह रहा हूं कि मन और उसके सब उपद्रवों को बाहर निकाल फेंको, ताकि पीछे तुम बच रहो—विशुद्ध, निर्मल, पारदर्शी, द्रष्टा।

– ओशो

23–29 अप्रैल

(उद्घाटन : 22 अप्रैल, संध्या 6.30)

संचालन : मा धर्म ज्योति

बुकिंग व अतिरिक्त जानकारी

ओशो राजयोग ध्यान केंद्र
सी-5/44, सफदरजंग डेवलपमेंट एरिया,
नई दिल्ली - 110016
फोन : 26862898 / 26964533

ओशो वर्ल्ड गैलेरिया
बी जी-09, अंसल प्लाज़ा, खेलगांव मार्ग,
नई दिल्ली-110049
फोन : 26261616, 26261617

मावसी-मझधार में किरनों का जागरण-गीत

आओ,
हम नये आदमी की बारहखड़ी रचें,
और उसके बच्चों के लिए
प्रवेशिका की पुस्तकें लिखें।
तूलिकाधर हाथ,
तुम चित्रित करो
सभी देशों के
अदब के, प्यार के
सम्मान के, ममता-मिलन के
तरीकों से समन्वित कुछ चित्र,
जिनसे
आदमी की भीतरी बारादरी के द्वार
थोड़े तो खुलें!
बीन के सुरकार,
ऐसी तान छेड़ो,
प्यार के सागर-तटों पर
टहलता हर आदमी
जिसको समझ ले
मगर होले;—
हर तरह का नाग डोले
बीन में जादू भरो!
ओ संपेरो, उठो,
बारूदी ज़हर से
सृष्टि को निर्भय करो!

कलम वालो, उठो,
फिर से मंत्र की रचना करो,
नये अक्षर पहन लेने को नया ऋत्
बेतरह अकुला रहा है।
मीत, थोड़ा रुको,
दो पल सुनो,
तुमको
वहां स्वर्णिम-भविष्यत् की
चिलमनों में कोई है, जो
कड़े पहरों से इशारे दे रहा है,
आवरण-अस्तित्व को झुठला रहा है।

उठो, शब्दों के रतनवालो, उठो!
उठो, अर्थों के वसनवालो, उठो!
उठो, रे भिनसार के पाखी सुरीले,
उठो, किरनीली कलमवालो, उठो!
उठो, आकर क्रांति का परचम
सम्हालो!
उठो, सूरज को मदद दो,
धरा के अपने उजालो!
उठ गये इनसान,
बेहद अंधेरा है;
बुझ रहे संस्कृति—दिये में तेल डालो!

— श्री राजेन्द्र अनुरागी
(स्वामी देव अनुरागी, भोपाल)